आपकी उम्र कभी इतनी ज्यादा नहीं होती कि आप नए लक्ष्य निर्धारित न कर सकें या नए सपने नहीं देख सकें। -कार्ल लुईस

अच्छी सोच

मैं और मेरा करने से होता है हमारा पतन

एक बिज़नेसमैन ने अपने डॉक्टर को बताया कि उसे कितना ज्यादा काम करना पड़ता है। उसने कुछ उदासी के साथ कहा, 'हर रात मैं ब्रीफकेस में काम भरकर घर ले जाता हूं।' डॉक्टर ने पूछा, 'आपको काम घर क्यों ले जाना पड़ता है।?' कुछ गुस्से में उसने कहा,'मुझे काम पूरा करना होता है।' डॉक्टर ने पूछा कि क्या कोई ऐसा नहीं है, जो आपकी जगह काम कर सके या मदद कर सके। उसने कहा कि यह काम वही कर सकता है।

डॉक्टर ने पूछा, 'यदि मैं कोई नुस्खा बताऊं तो आप मानेंगे?' उसके हां कहने पर डॉक्टर ने बिज़नेसमैन से आधे दिन की छुट्टी लेकर कब्रिस्तान में समय गुजारने को कहा। उसने पूछा, 'मैं क्यों कब्रिस्तान में समय गुजारूं?' डॉक्टर ने कहा, 'क्योंकि मैं चाहता हूं कि आप देखें कि वे कब्रें किसकी हैं। आपको यह अहसास हो कि उनमें से कई लोग वहां इसलिए हैं, क्योंकि वे आपकी तरह ही सोचते थे। आपके ध्यान में यह बात आए कि आपके जाने के बाद भी दुनिया चलती रहेगी।'

राधानाथ स्वामी
आध्यात्मिक गुरु

रोगी ने उस नुस्खे को गंभीरता से लिया और कब्रिस्तान में आधा दिन गुजारा। यह उसके लिए गहरा अनुभव था। उसने दुनिया में अपने अस्थायी अस्तित्व को समझा। पहली बार उसके भीतर शांति उतरी यह जानकर कि काम के चक्र में फंसने से बढ़कर भी जीवन में बहुत कुछ है। कई बार हम 'सिर्फ मैं यह काम कर सकता हूं' के दुष्चक्र में फंस जाते हैं। हमारे अहंकार को संतुष्ट करने की परिस्थितियों में इसके कारण हैं- जैसे स्पर्द्धा का भय, खुद के दरकिनार होने का डर, हर समय सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करने व दूसरों पर श्रेष्ठता साबित करने की लालसा, ईर्ष्या के कारण अन्य को मौका नहीं देना, अपनी व्यस्तता जताना आदि।

यदि हम इस पागलपन से हटकर तार्किक ढंग से सोचते हैं तो अहसास होता है कि इस दुष्चक्र का कोई अंत नहीं है। इसका उत्तर इस वैदिक बुद्धिमत्ता में है कि मानव अस्तित्व की परिपूर्णता सारे भौतिक संबंधों व प्रतिष्ठाओं से उदासीन होकर अपने कर्तव्य को लोक-सेवा और उससे भी महत्वपूर्ण ईश्वर-सेवा मानने में ही है। झूठा अहंकार हमें इस तरह सोचने को मजबूर करता है, 'मैं सर्वश्रेष्ठ हूं, मेरा काम भी सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए, मेरा परिवार, मेरी जाति, मेरा धर्म और मेरे बारे में हर चीज सर्वश्रेष्ठ है।' यह 'मैं और मेरा' की गलतफहमी ही दुनिया में हुए सारे भीषण युद्धों का कारण रहा है।

प्रेरणा • दुनिया में यह अहसास बढ़ रहा है कि प्रदूषण कम करने से कुछ नहीं होगा, जीवनशैली बदलनी होगी

नाकामी में छिपी धरती की सबसे बड़ी उम्मीद

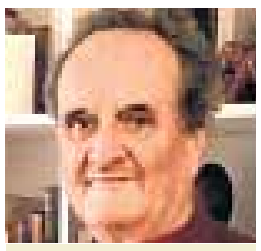

मार्क टली
भारत में बीबीसी के पूर्व ब्यूरो प्रमुख

जलवायु परिवर्तन के संकट से निपटने पर पेरिस में होने वाले सम्मेलन के नाकाम होने की आंशका है, लेकिन इसी में उम्मीद भी छिपी हुई है।

पोप फ्रांसिस ने प्रकृति पर मानव के प्रभुत्व की वह मान्यता खारिज कर दी है, जो घोर दोहन करने वाली पश्चिमी अर्थव्यवस्था का आधार रही है।

जीवन के विरोधाभासों में एक यह है कि अच्छी खबर प्रायः बुरी खबर में से निकलती है। इसलिए जब बुरी खबर हमें सदमा देती है तो हमें उसमें अच्छी खबर की संभावना तलाशनी चाहिए। क्या महात्मा गांधी की हत्या से बढ़कर कोई खराब खबर हो सकती है? फिर भी इस खबर ने जवाहरलाल नेहरू और वल्लभभाई पटेल में आत्मबोध जागा और उन्हें अहसास हुआ कि उन्हें अपने मतभेद खत्म करने चाहिए, जो नई सरकार को दो दिशाओं में खींच रहे थे। इसी के साथ, जिस हत्या से और भी भयावह दंगे भड़क सकते थे, उसका भारत पर संयत करने वाला प्रभाव पड़ा। 1991 में जो खबर आई वह तो स्तब्ध करने वाली थी। भारत दिवालिया होने की कगार पर था। प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने इस संकट का उपयोग मंत्रियों-नौकरशाहों को इस बात पर राजी करने में किया कि केवल बड़े आर्थिक सुधार ही भारत को बचा सकते हैं।

इसलिए मैं जो कह रहा हूं वह इतना अजीब नहीं, जितना कई लोगों को नज़र आ सकता है कि दो माह बाद पेरिस में जलवायु परिवर्तन पर होने वाले उस सम्मेलन संबंधी बुरी खबर में ही अच्छी खबर छिपी हो सकती है, जिसे 'दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण जलवायु वार्ता' कहा जा रहा है। सारे संकेत तो यही बता रहे हैं कि यह वार्ता भी हमेशा की इस 'तू-तू, मैं-मैं' में फंस जाएगी कि विकसित राष्ट्रों को कितनी गंदगी कम करनी चाहिए, जो उन्होंने हवा में डम्प की है। जो पहले ही वे डम्प कर चुके हैं, उसके लिए उन्हें कितना भुगतान करना चाहिए और विकासशील देशों को धनी देशों के जीवन स्तर तक पहुंचने की कोशिश में कितना प्रदूषण फैलाने की इजाजत होनी चाहिए ।

बिजलीघरों से निकलने वाले कार्बन को घटाने के अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के संकल्प को लेकर बड़ी उत्तेजना है।, लेकिन 'इकोनॉमिस्ट' ने इसे 'अनिवार्य रूप से व्यावहारिक और बहुत ही सौम्य' बताते हुए खारिज कर दिया। वैसे भी अमेरिका की घरेलू राजनीति इस संकल्प को भी हकीकत में बदलने से रोक ही देगी। जलवायु परिवर्तन पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के सलाहकार व पूर्व विदेश सचिव श्याम सरन ने कहा है कि पेरिस सम्मेलन से उम्मीद नहीं है कि वह वैश्विक तापमान में वृद्धि को 2 डिग्री के नीचे रखने के लक्ष्य को हासिल कर पाएगा। कई वैज्ञानिक तो इस लक्ष्य को भी इतना कम मानते हैं कि इससे जलवायु संकट को रोका नहीं जा सकता। केंद्र सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमनियन का कहना है कि विकसित देश जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए

विकासशील देशों को भुगतान नहीं करेंगे फिर चाहे संयुक्त राष्ट्र समझौते के तहत वे बंधे हुए ही क्यों न हों।

तो इस सब में अच्छी खबर कहा है? यह उन अपार संभावनाओं में निहित है, जो हमारे सामने होंगी यदि पेरिस जलवायु परिवर्तन सम्मेलन की धूमिल संभावनाएं मौजूदा वैश्विक रणनीति का दिवालियापन स्पष्ट कर दें। यह रणनीति जलवायु परिवर्तन को सीमित करने और इसके साथ ऊर्जा की ऊंची खपत पर आधारित जीवनशैली को बचाने के विरोधाभास पर आधारित है। अमेरिकी प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करते हैं, जंगल उजाड़ते हैं। प्राणियों का नाश कर देते हैं। इसके बाद भी जलवायु परिवर्तन से संबंधित मौजूदा दलीलें इस धारणा पर आधारित है कि अमेरिकी जीवनशैली एख आदर्श के रूप में हमारा लक्ष्य होनी चाहिए। टिकाऊ विकास पर दुनिया के अग्रणी विशेषज्ञों में से एक जेफरी सैक अमेरिकी अर्थव्यवस्था को 'प्रचार, कर्ज और बर्बादी की अर्थव्यवस्था' कहते हैं। जलवायु परिवर्तन का संकट और इकोलॉजी से संबंधित वृहत्तर संकट पैदा ही इसलिए हुआ, क्योंकि हमने ऐसे अर्थशास्त्र को अपनाया, जो दुनिया और जो भी इसमें है, उसे अपनी संपत्ति समझता है। ऐसी संपत्ति जिसे हम उपयोग कर सकते हैं और चाहने पर उसका दुरुपयोग भी कर सकते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार लिखा था, 'पश्चिम इस बात में गर्व अनुभव करता दिखाई देता है कि वह प्रकृति को वश में कर रहा है।' इसलिए पश्चिम को हवा को कचरा डालने के डम्प के रूप में देखने में कोई संकोच नहीं हुआ और भारत व अन्य विकासशील देश पश्चिम के ही रास्ते पर चल रहे हैं। परंतु भारतीय परंपरा क्या है? टैगोर ने कहा है, 'भारत अपना पूरा जोर उस समरसता व लयबद्धता पर देता है, जो व्यक्ति और ब्रह्मांड के बीच मौजूद है।' यदि पेरिस सम्मेलन के लिए जताया जा रहा निराशावादी पूर्वानुमान सही सिद्ध होता है तो हो सकता है हमें यह अहसास हो जाए कि प्रदूषणकारी उत्सर्जन को सिर्फ कम करना काफी नहीं है। हमें परंपरागत भारतीय राह अपनाकर प्रकृति के संतुलन को फिर स्थापित करना होगा। इस आशावादिता के लिए कारण हैं। हृदय के स्तर पर महत्वपूर्ण बदलाव के उदाहरण हमेशा रहे हैं, जिसे अंग्रेजी में चेंज ऑफ हार्ट कहते हैं। बहुत हद तक प्रकृति के प्रति पश्चिम के नज़रिये को इस ईसाई शिक्षा का परिणाम माना जा सकता है कि ईश्वर ने मानव को दुनिया पर प्रभुत्व दिया है। परंतु अब 1.20 अरब अनुयायियों के रोमन कैथोलिक चर्च के प्रमुख पोप फ्रांसिस ने ऐतिहासिक घोषणा में कहा है कि चर्च हमें यह नहीं सिखाता कि ईश्वर ने हमें दुनिया पर प्रभुत्व स्थापित करने का अधिकार दिया है। उन्होंने कहा, 'हमें दुनिया से हमारे रिश्ते के बारे में भाईचारे और सौंदर्य की भाषा बोलनी चाहिए।'

यह संदेश भारत में भी सुना जा रहा है। संघ परिवार से संबंधित भारतीय मजदूर संघ ने पोप की घोषणा का स्वागत किया है। यह अचरज की बात नहीं है, क्योंकि जनसंघ के विचारक दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि भारत को ऐसे राष्ट्र के निर्माण का लक्ष्य रखना चाहिए, जो प्रत्येक नागरिक को संपूर्ण सृष्टि से जुड़े होने की उच्च चेतना हासिल करने में मदद करे। अर्थशास्त्री राम गोपाल आगरवाला ने अपनी हाल ही की किताब 'इंडिया 2050, ए रोडमैप टू सस्टेनेबल प्रॉस्पेरिटी' (भारत 2050, स्थायी विकास की राह) में चेतावनी दी है कि धरती पर इतने संसाधन नहीं है कि 1.50 अरब भारतीय उस दर से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर सके, जिस दर पर आज धनी देश कर रहे हैं। भारत के अग्रणी भौतिकशास्त्री विक्रम सोनी ने हाल में 'नेचरली' नामक पुस्तक लिखी है, जिसके उपशीर्षक में लिखा है ट्रेड सॉफ्टली ऑन द प्लेनेट यानी इस धरती पर धीमे चलें। वे कहते है कि धरती नाजुक दौर में है। हमें जीवनशैली की ऐसी योजना विकसित करनी होगी, जो टिकाऊ हो। इसलिए कम से कम मेरे लिए तो यह अच्छी खबर है कि पेरिस का सम्मेलन नाकाम रहेगा। यह नाकामी हमें लोगों में यह संदेश पहुंचाने का अनूठा मौका देगी कि हमें प्रदूषण पर बहस करने से ज्यादा कुछ करने की जरूरत है। हमें 'जीवन की ऐसी योजना विकसित करने होगी, जो टिकाऊ साबित हो।'

marktullydelhi@gmail.com

खुशी के रंग

बचपन की खुशियों का कोई मोल नहीं होता। वह केवल महसूस की जा सकती हैं। यह फोटो इंडोनेशिया के बाली द्वीप की है, जहां बच्चे मस्ती कर रहे हैं। यह झरना नहीं, बांध का बहता पानी है। फोटोग्राफर लीसा हेंडरेवन ने एंगल व शटर स्पीड एडजस्ट करके ऐसा शॉट लिया कि यह प्राकृतिक झरना दिखे। तुकाड़ उंदा नदी पर बने बांध की यह जगह बच्चों को प्रिय है। वे रोज यहां आते हैं और इसी तरह मस्ती करते हैं।

तो ये करें...

जब अपराधबोध जीना मुश्किल कर दे

दूसरों के पहले खुद को माफ करें

- जिसे चोट पहुंचाई है मन में उसकी छवि लाकर माफी मांगे।
- मेडिटेशन करें व नकारात्मक भावनाएं निकलने तक डटे रहें।

हम दूसरों को तो माफ करते ही हैं, लेकिन अपनी गलतियों पर खुद को माफ नहीं कर पाते। अपनी गलतियों को समझकर खुद को माफ कर दें। कन्फेशन यानी गलती मानना भी एक तरह से खुद को माफ करना ही है। आंखें बंद कर जिसे चोट पहुंचाई है, उसकी छवि सामने लाकर उससे माफी मांगे। ऐसा करके हम अपने को ही माफ करते हैं। ध्यान हर नकारात्मक भावना से मुक्त होने का अच्छा साधन है। माना जाता है कि ध्यान करके बहुत शांति मिलती है। दरअसल, ऐसा होता नहीं। ध्यान में हम अपने अवचेतन में उतरते हैं, जहां कई तरह की भावनाएं होती हैं, जो ऊपर आने लगती हैं। ध्यान के शुरुआती दौर में बहुत बेचैनी, क्रोध, उदासी महसूस हो सकती है, लेकिन ध्यान करते रहें तो धीरे-धीरे शांति भी उतरने लगती है।

उदारता का कोई बड़ा काम करें

- विज़ुअलाइज़ेशन के ज़रिये अपने केंद्र पर पहुंचें।
- पूरी गंभीरता और गहरी सहानुभूति के साथ माफी मांगें।

जब हमारे कारण किसी को ऐसा नुकसान पहुंचे, जिसकी भरपाई मुश्किल है या अनजाने कोई शारीरिक अथवा मानसिक चोट पहुंचा दें तो अपराध बोध पैदा हो सकता है। भरपाई न हो सकने वाला नुकसान हो तो उदारता का कोई बड़ा काम करके उबरा जा सकता है। जैसे वाहन की टक्कर से कोई अपंग हुआ हो तो संस्था खोलकर विकलांगों की मदद कर इससे उबरा जा सकता है। आंखें बंद कर लें और आंखों के पीछे एक सीढ़ी की कल्पना करें, जिसके ऊपरी सिरे पर आप छोटे रूप में खड़े हैं और निचला सिरा आपके अस्तित्व के केंद्र पर है, जहां बहुत शांति है। फिर अपनी छवि को केंद्र पर पहुंचाए। उसे अपनी मर्जी से घूमने दें। जब शांति महसूस हो तो उसे सीढ़ी से ऊपर लाकर धीरे-धीरे आंखें खोल लें।

मन में दृश्य लाकर बदलाव लाएं

- कोरे कैनवस की कल्पना कर उस पर विचारों को देखें।
- वर्बलाइज़ेशन यानी विचारों को नए वाक्यों में दोहराएं।

किसी को धोखा दिया हो तो मन की आंखों के सामने वह घटना लाएं, लेकिन अब उस दृश्य में खुद को उचित व्यवहार करता देखें। दृश्य को छोटा-छोटा करते हुए उसे लुप्त कर दें। आंखें बंदकर कोरे कैनवस पर विचारों को आते देखा जा सकता है। फिर इन्हें आहिस्ते से जाने दें। जब विचारों को विदा करें तो वाकई हाथ हिलाकर उन्हें आगे धकेल सकते हैं। वर्बलाइज़ेशन से अपराध बोध को उदारता में बदले। जैसे 'मुझे मदद का वादा करके ऐन वक्त पर उसे धोखा नहीं देना था।' इसकी जगह 'मैं अहसानमंद हूं यह सीख पाकर कि जरूरत के वक्त मदद करना कितना अहम है।' यह दोहराएं कि भूतकाल की गलतियों के बावजूद मैं बहुत अच्छा इंसान हूं और सर्वश्रेष्ठ पाने का हकदार हूं।

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

चीन में निवेश से घबरा रही हैं दिग्गज कंपनियां

दो महीने पहले तक चीन की अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे मजबूत थी, लेकिन गिरावट की एक आंधी से वहां की सारी दिग्गज निवेशक कंपनियां हिल गईं। ऐसा इसलिए क्योंकि चीन की आर्थिक तस्वीर इन्हीं निवेशक कंपनियों से चमक रही थी। वहां के शेयर बाजार में इतिहास की सबसे बड़ी गिरावट और चीनी मुद्रा युआन के अवमूल्यन से अरबों डॉलर का नुकसान कंपनियों को हुआ। इसके चलते चीन में व्यापार करने वाली निवेशक कंपनियां कामकाज समेट रही हैं या फिर निवेश घटाने में लगी हैं। वे अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं।

• कीथ ब्रेडशर, आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ

ऑस्ट्रेलिया की मल्टीनेशनल कंपनी बीएचपी बिलिटन भारी खर्च के लिए मशहूर है। वह ऑस्ट्रेलिया में लौह अयस्क का खनन, चिली में तांबे का खनन और त्रिनिदाद में तेल शोधन करती है। इस कंपनी के लिए चीन सबसे बड़ा और अच्छा कस्टमर था, क्योंकि वहां इसके उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही थी। अब ठहराव आ गया है। चीन की कमजोर होती अर्थव्यवस्था और हाल ही की गिरावट से बीएचपी ने अपने कदम पीछे खींचने शुरू कर दिए हैं। इस कंपनी को लगने लगा है कि चीन एकमात्र बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं बन सकता। कंपनी का लाभ लगातार कम हो रहा है इसीलिए उसने चीन के लिए अपना निवेश बजट दो तिहाई से अधिक कम कर दिया है। पिछले साल बीएचपी ने चीन में प्रतिदिन इतना लोहा भेजा, जो एम्पायर एस्टेट बिल्डिंग भरने के लिए काफी होता। चीन में उसका उपयोग गगनचुंबी इमारतें बनाने, रेल लाइनें बिछाने एवं अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर में किया गया।

पिछले दशक में चीन के आर्थिक विकास से वैश्विक अर्थव्यवस्था को नया अकार मिलने लगा था। वह कॉर्पोरेट स्ट्रेटजी, फाइनैंशियल मार्केट और जियोपॉलिटिकल फैसलों में सबसे प्रभावशाली बनकर उभरा था। पिछले दिनों उसके बाजार में गिरावट से यह बातें निराधार साबित हुईं। हांगकांग की वाह कवोन्ग मेरीटाइम ट्रांसपोर्ट होल्डिंग कंपनी के चीफ एग्जीक्यूटिव टिम हक्सले कहते हैं 'यह ब्लैक आर्ट जैसे हालात हैं।' आज जो हो रहा है, उसके आधार पर मैं लंबी अवधि के फैसले नहीं कर सकता। डच ग्रुप रॉयल फिलिप्स के चीफ एग्जीक्यूटिव फ्रान्स वेन ह्यूटन कहते हैं- चीन में हमारे लिए पांच साल शानदार रहे। वहां आर्थिक गिरावट का दौर अभी शुरू हुआ है। अब जरूरत है कि हम वास्तविकता पर ध्यान दें। जबकि जर्मनी ने चीनी ग्रोथ से जबर्दस्त लाभ कमाया, क्योंकि मशीन टूल और फैक्टरी उपकरणों में उसे महारथ हासिल है। दूसरी ओर स्मार्टफोन, ऑटोमोबाइल निर्माता एवं रिटेलर्स आश्चर्यचकित हैं क्योंकि चीन में इन चीजों के खरीदार वैसे ही बने हुए हैं। जनरल मोटर्स एवं फोर्ड फैक्टरी ने गर्मियों में कम कारें चीन पहुंचाई। एपल के टिम कुक ने कहा कि जुलाई-अगस्त में कंपनी ने अच्छा कारोबार किया।

कई देशों पर असर : कंपनियां ही अपना पुर्नमूल्यांकन नहीं कर रहीं, इनमें देश भी शामिल हैं। तेल कीमतों में गिरावट एवं पश्चिमी प्रतिबंधों के चलते रूस ने अपनी वित्तीय जरूरतें पूरी करने के लिए चीन का रुख कर लिया है। वेनेजुएला, नाइजीरिया और यूक्रेन प्रमुख रूप से निवेश एवं लोन के लिए चीन पर ही निर्भर हैं। उधर, चीन को लेकर बड़ा दर्द ब्राजील का है, क्योंकि वह भी चीन पर निर्भर है। उसकी आर्थिक स्थिति पहले ही खराब है। इस वर्ष उसका 23.6 प्रतिशत चीन को निर्यात घट गया है। उसकी प्रमुख खनन कंपनी वेल को अपनी संपत्तियां बेचनी पड़ रही हैं। पूरा लैटिन अमेरिका इसी तरह प्रभावित है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व अधिकारी चीन के कारण वैश्विक स्थितियों को लेकर चिंतित हैं। न्यूयॉर्क फेड के प्रेसीडेंट विलियम सी. डुडले ने कहा कि सितंबर में ब्जाज दरें बढ़ सकती हैं। एक सच्चाई यह भी है चीन में रेस्तरां, हैल्थ केयर जैसे सेवा क्षेत्रों में लगातार वृद्धि हो रही है। चीनी नेतृत्व की चिंता सामाजिक स्थिरता बनाए रखना है। इसके लिए वे फैसले भी ले रहे हैं। इसमें फाइनैंशियल सिस्टम में पूंजी डालना और शेयर बाजार में सुधार लाने जैसी कोशिशें शामिल हैं। वैसे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को ऐसी आर्थिक गिरावट वाली स्थिति से निपटने का अनुभव नहीं है। इससे कुछ अर्थशास्त्री चिंतित हैं क्योंकि सरकार ऐसे फैसले ले रही है, जिनके परिणाम अच्छे होने के बजाय ज्यादा तकलीफ देंगे।

© The New York Times

असंतोष भी है बड़ा कारण

चीन की अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त अन्य कारण भी हैं, जिनसे निवेशक कंपनियां बचना चाहती हैं-

- सबसे बड़े लॉजिस्टिक पोर्ट में से एक तियानजिन के कैमिकल वेयरहाउस में भयानक अग्निकांड।
- व्यापक क्षेत्र में श्रमिकों का आंदोलन बढ़ना।
- बंदरगाहों के लंबे समय तक श्रमिकों में वेतन नहीं मिलने को लेकर असंतोष।
- निर्यात करने वाली फैक्टरियों में उत्पादन को लेकर लंबे समय से संघर्ष हो रहे हैं।

यूएन की कमान महिला को सौंपने की तैयारी

संयुक्त राष्ट्र में आठ महासचिव हुए हैं, सारे पुरुष। सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्य पांच महाशक्तियां बंद कमरे में महासचिव चुन लेती हैं। सत्तर साल पहले दुनिया की ज्वलंत समस्याओं को कूटनीति और वैश्विक सहमति से सुलझाने के लिए बने इस संगठन के शीर्ष पद पर महिला चुनी जाए तो यह बहुत ही सशक्त संकेत होगा। अच्छी बात यह है कि मौजूदा महासचिव बान की मून का दूसरा कार्यकाल 31 दिसंबर 2016 को पूरा होने के पहले उक्त दोनों उद्देश्यों की पैरवी अपूर्व उत्साह के साथ की जा रही है। क्रोएशिया और नामीबिया महासचिव के चयन में संगठन के 193 सदस्यों को अधिक तवज्जों देने के प्रयासों का नेतृत्व कर रहे हैं। इससे सदस्यों को उम्मीदवार नामांकित करने और उनमें से कुछ प्रत्याशियों की अंतिम सूची तैयार करने का अधिकार मिल जाएगा।

अब तक यही होता था कि ब्रिटेन, चीन, फ्रांस, रूस और अमेरिका बंद कमरे में एक संक्षिप्त सूची से महासचिव चुन लेते थे और यह सूची भी जाहिर नहीं की जाती थी। अभी ऐसी कोई प्रक्रिया नहीं है कि सदस्य राष्ट्र वोट देकर महासचिव चुन सकें पर थोड़ी अधिक पारदर्शिता दिखाकर सुरक्षा परिषद इस मसले पर दुनियाभर से दिखाई जा रही चिंता पर ध्यान दे रही है।

महासचिव चुने जाने की प्रक्रिया पूरी तरह बदली जाती है या नहीं यह आगे की बात है, लेकिन दर्जनों सदस्य राष्ट्र बान की मून के बाद किसी महिला को महासचिव बनाने पर जबर्दस्त दबाव डाल रहे हैं, क्योंकि वे अपनी कोई छाप नहीं छोड़ पाए हैं। इन देशों में कोलंबिया सबसे आगे है। वह उन 20 फीसदी सदस्यों में से है, जिनका संयुक्त राष्ट्र में प्रतिनिधित्व महिलाएं करती हैं। महिला महासचिव की मांग के लिए समर्थन मांगते हुए कोलंबिया की दूत मारिया, एमा मेजिया ने कहा, 'लैंगिक समानता सबसे गंभीर चुनौती है। यह ऐसा अपूर्ण लक्ष्य है, जो समावेशी व मजबूत भविष्य के लिए निर्णायक है।' संयुक्त राष्ट्र के 1946 के प्रस्ताव में कहा गया है कि 'श्रेष्ठता और उच्च उपलब्धियों के व्यक्ति को महासचिव बनना चाहिए।' यहां व्यक्ति का अर्थ पुरुष नहीं लेना चाहिए। कोलंबिया की पहल पर 44 राष्ट्रों ने दस्तखत किए हैं, जिसमें स्थायी सदस्यों में से कोई नहीं है। समांथा पावर संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी दूत हैं, वे महिला अधिकारों के लिए लड़ती रही हैं।

इस बीच, संभावित महिला उम्मीदवारों की सूचियां संयुक्त राष्ट्र में वितरीत होने भी लगी है। 'कैम्पेन टू इलेक्ट वुमन यूएन सेक्रेटरी जनरल' समूह ने भी एक सूची वितरित की है। इसमें लाइबेरिया की राष्ट्रपति एलन जॉनसन सिरलीफ, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की प्रमुख क्रिस्टिन लैगार्ड और लैटिन अमेरिका व कैरेबिया आर्थिक आयोग की कार्यकारी महासचिव बार्सेना इबारा के नाम शामिल हैं। © The New York Times